वर्ष-3 अंक-10

धार्मिक त्रैमासिक बाल पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक : आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

टन टन टन टन टेलीफोन
सिद्धप्रभु का आया फोन

यह दुनिया है अजब निराली, चार गति में दुःख है भारी
इन दुःखों की बात सुनी तो, हो गया बिल्कुल मौन ।
टन टन टन टन टेलीफोन, सिद्धप्रभु का आया फोन
चार गति में अब न रहूंगा, सम्यक दर्शन अभी करुंगा
सिद्ध प्रभु सच्चे साथी हैं, इस दुनिया में अपना कौन ॥
टन टन टन टन टेलीफोन, सिद्धप्रभु का आया फोन

पांच परमेष्ठी में आचार्य परमेष्ठी तीसरे नम्बर के परमेष्ठी हैं। अनेक आचार्यों ने जैन धर्म के प्रचार-प्रसार में बहुत योगदान दिया है। आईये हम आपका परिचय कराते हैं प्रसिद्ध आचार्य कुन्दकुन्द से ---

आचार्य कुन्दकुन्द

1. दिगम्बर परम्परा के प्रमुख आचार्य कुन्दकुन्द का जन्म आज से लगभग 2000 वर्ष पूर्व भारत आन्ध्रप्रदेश के अनन्तपुर जिले में गुण्टुकल स्टेशन से चार मील दूर कोण्डकुन्दु (कुन्दकुन्दपुरम्) या कुरुमलई में ईसा मसीह के जन्म से 108 वर्ष पूर्व हुआ था। बचपन में उनकी माँ ने उन्हें धर्म के संस्कार दिये जिसके प्रभाव से मात्र 11 वर्ष छोटी से आयु में दिगम्बर मुनि की दीक्षा ले ली। उनका मुनि दीक्षा का नाम पद्मनन्दि था। 33 वर्ष तक मुनि पद पर रहे और 44 वर्ष की आयु में आचार्य पदवी प्राप्त हुई।
2. आचार्य कुन्दकुन्द के बारे में प्रसिद्ध है कि दक्षिण के कुरुमलई ग्राम में करमण्डु नामक सेठ के यहाँ मणिरत्नम नाम का ग्वाला रहता था। उसे जले हुये जंगल में कुछ शास्त्र सुरक्षित मिले। वह अनपढ़ ग्वाला उन शास्त्रों को महान वस्तु मानकर उनको घर में रखकर उनकी पूजा करने लगा। बाद में एक मुनि को भेंट में दे दिये। इसी उत्तम दान के प्रभाव से वह ग्वाला मरने के बाद उसी सेठ के घर में कुन्दकुन्द नामक पुत्र हुआ।
3. आचार्य कुन्दकुन्द ने देवों की सहायता से विदेह क्षेत्र जाकर सीमंधर भगवान के दर्शन किये और वहाँ आठ दिन रहकर उनके उपदेश का साक्षात् लाभ भी लिया था। वहाँ से लौटकर उन्होंने पंच परमागम समयसार, प्रवचनसार, नियमसार,अष्टपाहुड़ और पंचास्तिकाय की रचना की। उन्होंने कुल 84 पाहुड़ की रचना की।

अगले अंक में मिलेंगे दूसरे आचार्य के साथ --

आगर्भ दिगम्बर मुनि

जिनसेन अपनी 5 वर्ष की अवस्था में बाल्यावस्था में अपने मित्रों के साथ खेल रहे थे। जो एक दूसरे को खोजकर छू लेता था वह जीत जाता था। जिनसेन ने कहा–जो कोई मुझे छू लेगा उसे आज का अपना भोजन दे दूँगा। किसी लड़के ने जिनसेन को खोजकर उसका हाथ छू लिया तो जिनसेन ने कहा – यह तो तुमने मेरे हाथ को स्पर्श किया है मुझे कहाँ पकड़ा?

इस प्रकार किसी ने कोई अंग पकड़ा, किसी ने कोई। सबको एक ही उत्तर मिला – मुझे पकड़ो, यह तो सब शरीर है। मुझे छूना तो दूर रहा, तुम लोग मुझे देख भी नहीं सकते। यह दृश्य एक आचार्य देख रहे थे। उन्होंने बच्चे को प्रतिभाशाली समझकर उसके माता-पिता से पढ़ाने के लिये मांग लिया।

समय बीतने पर यही बालक महान आचार्य जिनसेन के नाम से प्रसिद्ध हुये। ये आगर्भ दिगम्बर मुनि थे, आगर्भ दिगम्बर का तात्पर्य जिन्होंने जन्म से मृत्यु पर्यन्त कपड़े नहीं पहने।

– साभार सन्मति संदेश

धर्मशाला

महाराजा विक्रमादित्य को अपने राजमहल की सुन्दरता पर बहुत गौरव था। एक बार उस राजभवन में एक विद्वान ने आकर ठहरने की इच्छा बताई तो राजा के सेवकों ने कहा - पण्डितजी! यह धर्मशाला नहीं है, यहाँ ठहरने का स्थान नहीं मिल सकता। तभी महाराज विक्रमादित्य बाहर से लौट रहे थे तो पूछने पर राजसेवकों ने विद्वान की जिद सुनाई। तब महाराज ने विद्वान को बहुत समझाया, लेकिन पण्डितजी नहीं माने तो महाराज ने क्रोध में कहा कि इस पण्डित को राजमहल से बाहर निकाल दो।

तब विद्वान ने कहा - महाराज! आप गुस्सा क्यों करते हैं? यह तो धर्मशाला है। आप भी इसमें ठहरिये, मैं भी इसमें ठहरता हूँ।

राजा बोला - यह तो मेरा राजभवन है, धर्मशाला तो यहाँ से कुछ दूरी पर है।

विद्वान बोला - आप यहाँ 100 वर्षों से यहाँ रहते हैं क्या ?

राजा बोला - क्या पागलपन की बातें करते हो? मेरी आयु अभी 50 वर्ष भी नहीं है।

विद्वान बोला - आपसे पहले इसमें कौन रहता था ?

राजा बोला - मेरे पूज्य पिताजी।

विद्वान बोला - तो वे अब कहाँ चले गये और कब लौटेंगे ?

राजा बोला - उनका तो स्वर्गवास हो गया, वे अब कभी नहीं लौटेंगे।

विद्वान बोला - तो फिर आप इसमें कब तक रहेंगे?

राजा बोला - जब तक जीवन शेष है। अंत में तो सभी को जाना पड़ता है।

यह सुनकर विद्वान हंसकर बोला - तो भले आदमी! जहाँ मनुष्य कुछ समय के लिये ठहरकर चला जाये उसे धर्मशाला ही तो कहते हैं। तो ये राजमहल धर्मशाला ही हुआ ना।

साभार - पं. पूनमचंदजी छाबड़ा, जयपुर

कपटी पीटा जाता है

रखे बांसुरी सब होंठों पर, पर पीटें सब ढोलक को,
भेद देख ढ़ोलक ने पूछा, पक्षपात ऐसा क्यों हो ॥
पक्षपात यह ना कहलाता, यथा काम फल मिलता है,
पोल दिखाओ तुम तो अपनी,सो छल का फल मिलता है ॥
कहे बांसुरी मैं तो अपनी, पोल खोलकर रखती हूँ,
सात-सात छेढों के व्दारा,सब कुछ बाहर करती हूँ ॥
तुम तो सब कुछ अपने अन्दर, छिपा-छिपाकर रखते हो,
इसीलिये तो डण्डे व्दारा, पिटकर सब कुछ सहते हो ॥
मै अपने सारे ढोषों को, बाहर फेंका करती हूँ,
इसीलिये तो सब लोगों के, होंठों पर नित रहती हूँ॥
सो मेरे प्यारे भाई तुम, छोड़ो छल मायाचारी,
तभी प्यार सब जग का पाओ, बन जाओ 'सुव्रत' धारी॥

रचनाकार - मुनि सुव्रत सागरजी

कविता

मम्मी मम्मी मम्मी मुझको मुझको मुझको
एक छोटी सी साइकल दिला दो ना,
साइकल चलाऊँगा पाठशाला जाऊँगा,
जिनवाणी सुनूँगा, सच्चा जैनी बनूँगा।
मम्मी मम्मी मम्मी .... ॥ 1 ॥

मम्मी मम्मी मम्मी मुझको मुझको मुझको
एक छोटा कलशा दिला दो ना,
जल भर लाऊँगा, अभिषेक करूँगा,
प्रभुजी की पूजन भक्ति करूँगा,
मम्मी मम्मी मम्मी मुझको .... ॥ 2 ॥

मम्मी मम्मी मम्मी मुझको मुझको मुझको
एक बालबोध पुस्तक दिला दो ना।
पुस्तक पढ़ूँगा, सात तत्व जानूँगा,
रात्रि भोजन त्यागूँगा, शुद्ध जल पीयूँगा,
मम्मी मम्मी मम्मी मुझको मुझको मुझको ॥3॥

– संकलन सुरभि जैन, बरगी

सम्यक्त्व के आठ अंग की कहानियों के अंतर्गत आप अब तक चार कहानियाँ पढ़ चुके हैं । इस अंक में पढ़िये उपगूहन अंग में प्रसिद्ध जिनभक्त सेठ की कहानी। उपगूहन का अर्थ है साधर्मी के दोषों को छिपाना।

सेठ की जिनभक्ति

पादलिप्त नगर में एक सेठ रहता था । वह जिनेन्द्र भगवान का महान भक्त था। वह धर्मात्माओं के गुणों की प्रसिद्धि और दोषों को छिपाने के लिये प्रसिद्ध था। उसके पास बहुत धन-वैभव था। उसका सात मंजिला महल था और उस महल के सातवीं मंजिल पर उसने एक चैत्यालय बनाया था। उस चैत्यालय में बहुमूल्य रत्न से बनाई हुई भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा विराजमान की थी। उस प्रतिमा के ऊपर रत्न जड़ित छत्र लगा हुआ था जिसमें रत्न लगे हुये थे।

उसी नगर में पाटलीपुत्र नगर का राजकुमार सुवीर बुरे लड़कों की संगति में चोर बन गया। एक बार वह सेठ के चैत्यालय में गया और उसके छत्र में लगे रत्नों की चोरी करने के भाव हुये। उसने अपने साथी चोरों से कहा - जो कोई उस जिनभक्त सेठ के महल से कीमती नीलम रत्न लेकर आयेगा उसे बड़ा पुरस्कार मिलेगा। सूर्य नाम का चोर इसके लिये तैयार हो गया। उसने रत्न चुराने के कई प्रयास किये परन्तु सफल नहीं हुआ। अन्त में वह चोर त्यागी ब्रह्मचारी का वेश बनाकर सेठ के यहाँ पहुँच गया और अपनी बोलने की कला और झूठे धर्म के आचरण से सेठ को प्रभावित कर लिया। सेठ ने उससे प्रभावित होकर अपने चैत्यालय की देखभाल की व्यवस्था का काम सौंप दिया।

सूर्य चोर यह काम लेकर अत्यन्त प्रसन्न हो गया और नीलम मणि चुराने के लिये अवसर की तलाश करने लगा। कुछ दिनों बाद

सेठजी को आवश्यक कार्य से दूसरे गांव जाना था। वह चैत्यालय की सारी व्यवस्था उस बनावटी ब्रह्मचारी को देकर चले गये। रात्रि होने पर सेठ ने दूसरे गांव के बाहर ठहर गया। रात होने पर वह चोर उस नीलम मणि को लेकर भागने लगा। परन्तु नीलम मणि के तेज प्रकाश के कारण पहरेदारों को कुछ शंका हुई और वे उसके पीछे दौड़ने लगे।

अरे....... कोई मंदिर का मणि लेकर भाग रहा है। पकड़ो......पकड़ो....... पकड़ो..... - चारों ओर शोर होने लगा। पीछे सैनिक देखकर सूर्य चोर भागता रहा। भागते- भागते वह चोर उसी गांव में घुस गया जहाँ सेठजी ठहरे थे। शोर सुनकर सेठजी भी बाहर आ गये। तभी सैनिकों ने चोर को पकड़ लिया। सेठजी ने चोर को देखा और सारी कहानी तुरन्त समझ गये और सोचने लगे कि यदि रत्न की चोरी के अपराध में यह नकली ब्रह्मचारी पकड़ा गया तो धर्म की बहुत बदनामी होगी और भविष्य में लोग मंदिर के पुजारी पर शंका करते रहेंगे। सेठजी तुरन्त बोले - अरे भाई ! ये चोर नहीं है, धर्मात्मा हैं। नीलममणि लाने के लिये मैंने ही इसे कहा था। तुम गल्ती से इसे चोर समझ रहे हो।

यह सुनकर सैनिकों ने उसे छोड़ दिया और पूछा - यदि इसे नीलम मणि लाने के लिये आपने कहा था तो ये भाग क्यों रहे थे? सेठजी बोले- अरे भाई ! डरकर भाग रहे होंगे। यह सुनकर सभी वापस चले गये।

बाद में सेठजी ने सूर्य चोर को एकांत में ले जाकर बहुत समझाया कि यदि तू पकड़ा जाता तो तुझे कारावास में कितने दुःख भोगने पड़ते और भविष्य में कोई भी जिनमंदिर के पुजारी पर विश्वास नहीं करता। जैन धर्म की बदनामी भी होती। लोग कहते कि जैन धर्म के त्यागी-व्रती चोरी करते हैं। इसलिये तू इस कार्य को छोड़ दे।

सेठजी की करुणा देखकर और विचार सुनकर सूर्य चोर ने क्षमा मांगी और धर्मात्मा बनने का संकल्प लिया। इस प्रकार जिनभक्त सेठ के कारण उपगूहन गुण से धर्म की प्रभावना हुई।

लघु कहानी

सच्चा वैराग्य

एक व्यापारी रत्नों के कंबल बेचने के लिये राजा श्रेणिक की राजसभा में आया लेकिन उन कंबलों की मूल्य अधिक होने से राजा ने उन कबंलों को नहीं खरीदा। बाद में नगर सेठ शालिभद्र की माँ ने वही रत्नों के कम्बल खरीदकर अपनी 32 बहुओं को दिये। बहुओं को रत्नों के कंबल पसंद न आने पर एक दिन ओढ़कर कचराघर में फेंक दिये। सफाई करने वाली मेहतरानी उसे उठाकर ओढ़ लिया और महल में काम करने गई। रानी को वे कंबल बहुत पसंद आये। पूछने पर मेहतरानी ने कंबलों की पूरी कहानी सुनाई। रानी के मुख से सेठ शालिभद्र का वैभव सुनकर राजा उससे मिलने गये। राजा को घर पर आया देखकर सेठानी ने पुत्र शालिभद्र से कहा - बेटा चलो! हमारे राजा हमसे मिलने आये हैं और तुम्हें बुला रहे हैं। वह राजा से मिलने तो आ गया पर शालिभद्र आश्चर्य से सोचता रहा कि मेरा भी कोई स्वामी है? जैन धर्म में तो यह बतलाया है कि प्रत्येक जीव अपना स्वामी है। संसार में स्वामी और सेवक का व्यवहार चलता है। मैं स्वतंत्रतापूर्वक जीने के लिये मुनि दीक्षा लूँगा। शालिभद्र का यह निर्णय सुनकर उनकी समस्त बत्तीस पत्नियाँ रोने लगीं और माताजी भी बहुत दुःखी हुईं। यह देखकर शालिभद्र ने निर्णय किया कि मैं प्रतिदिन एक पत्नी को छोड़ता जाऊँगा। इस तरह बत्तीस दिन के बाद मैं दीक्षा ले लूँगा।

यह समाचार सुनकर शालिभद्र की बहिन रोने लगी। उसके पति धन्नासेठ के पूछने पर शालिभद्र के दीक्षा लेने की बात सुनाई। तब धन्ना सेठ ने कहा कि तेरा भाई तो कायर है। क्या उसे मालूम है कि वह बत्तीस दिन तक जीवित रहेगा ? जब वैराग्य आ गया है तो एक पल भी रुकना सही नहीं है। तो पत्नी ने कहा- कहना आसान है परंतु करना कठिन होता है। क्या आप में ऐसी शक्ति है? तो धन्ना सेठ ने कहा कि मुझमें तो मोक्ष जाने की शक्ति है तो दीक्षा लेना कौन सा कठिन कार्य है ? ऐसा कहकर धन्ना सेठ ने अपने साले शालिभद्र को संबोधन किया और दोनों ने उसी दिन भगवान महावीर के समवशरण में जाकर मुनि दीक्षा ले ली। ऐसा होता है सच्चा वैराग्य।

जिनवाणी का अनादर करना, दर्शन आदि कार्य में बाधा पहुँचाना, बहुत देर तक सोना, दोपहर में सोना,आलस करना आदि कारणों से दर्शनावरण कर्म का बंध होता है।

3. मोहनीय कर्म – जिस कर्म के उदय के निमित्त में जीव अपना आत्मस्वरूप नहीं जान पाता, उसे मोहनीय कर्म कहते हैं। इस कर्म के उदय मेंजीव शरीर को अपना मानता है, दूसरे पदार्थों का अपना मानना, तप करने मेंकष्ट मानना आदि कार्य होते हैं। जैसे शराब पीने वाला अपने होश में नहीं रहता वैसे ही मोहनीय कर्म के उदय वाला जीव अपनी आत्मा को भूल जाता है।

सच्चे धर्म की निंदा करना, धार्मिक कार्यों में बाधा पहुँचाना, अधिक कषाय करना, बहुत बोलना आदि कार्यों से मोहनीय कर्म का बंध होता है।

4. अंतराय कर्म – जिस कर्म के उदय में जीव को भोग, उपभोग, शक्ति,दान करने में, किसी वस्तु के प्राप्त करने में बाधा उत्पन्न हो उसे अंतराय कर्म कहते हैं। जैसे – भोजन करने बैठे और कोई जीव भोजन में गिर गया, दान करने की भावना हुई यदि कोई कुछ दे रहा हो तो किसी ने मना कर दिया आदि प्रकार से कर्म का उदय आता है।

किसी अन्यजीव के भोग, उपभोग में, दान करने में अथवा प्राप्त करने में, बाधा पहुँचाने से और शक्ति के सही उपयोग न करने से अंतराय कर्म का बंधन होना है।

आपने चार घातिया कर्मों के बारे में जाना और शेष चार अघातिया कर्मों के बारे में अगले अंक में ---।

प्यारे बच्चो!
कोल्ड ड्रिंक्स से
बचके रहना रे ----
नही पियो रे--।

बच्चो! एक बार फिर से गर्मी का मौसम आ रहा है और गर्मी के मौसम में कोल्ड ड्रिंक्स या आइसक्रीम खाने का मजा ही अलग आता है और छुट्टियाँ हों तो क्या कहना। पर आप कोल्डड्रिंक्स पीयें उससे पहले आपसे हम कुछ बात करना चाहते हैं।

पहली बात तो कोल्डड्रिंक्स बिना छना पानी है और अप्रेल माह में बाजार में आने वाली कोल्डड्रिंक्स दिसम्बर में ही तैयार हो जाती है। जैन दर्शन के अनुसार छानकर रखा हुआ पानी 48 मिनिट बाद तो अपने आप बिना छना हो जाता है। किसी भी तरह रखा हुआ पानी 48 घंटे पीने योग्य ही नहीं रहता।

विज्ञान के अनुसार भी कोल्ड ड्रिंक्स पीने योग्य नहीं है। अगस्त 2008 में सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट ने सभी कोल्ड ड्रिंक्स की जाँच की जिसके अनुसार पेप्सी में 15.2, कोका कोला में 13.4, 7 अप में 12.5, ड्यूक में 10.5, मिरिंडा में 10.7, थम्स अप में 10.9, लिम्का में 6.7, फेंटा में 9.1 प्रतिशत जहरीला रसायन पाया गया। लोकसभा की संसदीय समिति ने इस रिपोर्ट को सही बताया।

कोल्ड ड्रिंक्स में पाये जाने वाले जहरीले रसायन और उनसे होने वाली हानियाँ-

1. लिंडेन - लिवर, किडनी, नर्वस सिस्टम पर बुरा असर और शरीर की प्रतिरोधक क्षमता पर बुरा असर।
2. न्यूरोटॉक्सिन क्लोरोपायरीफॉस - इसकी अधिकता से बच्चों के

दिमाग और नर्वस और इम्यून सिस्टम पर बुरा असर।

3. मैलाथियम - शरीर की प्रतिरोधक क्षमता पर बुरा असर।
4. कार्बन डॉयआक्साइड, कार्बन एसिड - गला खराब की शिकायत।
5. शुगर और कैलोरी - मोटापा और डायबिटीज के मरीज को डॉक्टर मना करते हैं।

इन्हें भी जानिये -

1. कोका कोला और पेप्सी विदेशी कंपनी है और कोल्ड ड्रिंक्स से होने वाली आय देश से बाहर चली जाती है , इससे देश को आर्थिक हानि होती है।
2. कोका कोला और पेप्सी विश्व के 180 देशों में कारोबार करती हैं। कोका कोला भारत में प्रतिदिन 1 लाख बोतलों की बिक्री करती है। स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचाने वाली ये कंपनियाँ प्रतिवर्ष अरबों डॉलर कमा रही हैं।
3. पेप्सी की स्थापना कैलम ब्रेढम नामक फार्मासिस्ट ने सन् 1898 में की थी। डिप्रेशन दूर करने के लिये पेप्सी का फार्मूला बनाया गया बाद में कोल्ड ड्रिंक्स के रूप में प्रसिध्द हो गई और 1959 तक इसका फायदा 700 प्रतिशत हो गया।
4. 14 जून 1999 को कोका कोला पीकर बेल्जियम के एक स्कूल के बच्चे बीमार हो गये। जिससे वहाँ की सरकार ने कोका कोला पर प्रतिबंध लगा दिया। बेल्जियम के बाद फ्रांस और लक्जमबर्ग की सरकारों ने उस पर प्रतिबंध लगाया।
5. पोलैण्ड में कोका कोला कंपनी बोनोक्सा प्लस के नाम से मिनरल वॉटर बनाती है। उसमें विषैला पदार्थ मिलने पर 29 जून 1999 को 1 लाख 80 हजार बोतलें कंपनी ने वापस बुला लीं।
6. केरल में मार्क्सवादी सरकार ने कोला कंपनी के उत्पादन और वितरण पर प्रतिबंध लगा दिया।

7. कोला कंपनी पर आरोप है कि कोलंबिया में उसने अपने 8 कर्मचारियों की हत्या करवा दी। हत्या के बदले कंपनी से 50 करोड डॉलर मुआवजे की मांग की गई है। इसका केस मियामी में चल रहा है।
8. 2003 में अनेक अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने "अंतर्राष्ट्रीय कोका कोला बहिष्कार दिवस" मनाया था।
9. 2004 के जून माह में ब्रिटेन में पानी की बोतलों में कैंसर फैलाने वाले रसायनों की उपस्थिति पाई गई।
10. फिलीपीन्स के कोस्टगार्ड ने पता लगाया कि जनवरी 2001 में कोला कंपनी ने 10 ड्रम विषैला बंकर आइल मारीकिना नदी में डाल दिया था। यह नदी मनीला को पेय जल की आपूर्ति करती है।
11. सितम्बर 1999 में इटली सरकार ने नियमों का पालन न करने के कारण कंपनी पर 1 करोड 61 लाख डॉलर का जुर्माना किया था।
12. भारत में कोल्ड ड्रिंक्स का यह व्यापार भ्रष्ट राजनेताओं के कारण चल रहा है।

तो क्या करें -

1. गांधीजी के विदेशी कपड़े का बहिष्कार जैसे ही विदेशी कोल्ड ड्रिंक्स का बहिष्कार करें। यह देश सेवा है।
2. देशी पेय या घर के ठंडे पेय पदार्थों का उपयोग करें। जैसे - शरबत, फलों का जूस, आम का पानी, जलजीरा का पानी, छांछ, लस्सी, नींबू पानी आदि का उपयोग करें। यह अच्छे स्वास्थ्य के साथ स्वादिष्ट भी हैं।

तो साथियो ! अब क्या करेंगे आप -

इतना जानने के बाद आप कोल्ड ड्रिंक्स का त्याग करेंगे या नहीं- यह आपके विवेक पर निर्भर है। यदि आपने इनका त्याग कर दिया तो लम्बी आयु और स्वस्थ जीवन के लिये आपको शुभकामनायें।

दैनिक भास्कर, नवभारत टाइम्स, अमरउजाला आदि समाचार पत्रों से

हमारे तीर्थक्षेत्र

अष्टापदजी कैलाश बद्रीनाथ

यह प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ जी का निर्वाण स्थल है। उन्होंने कैलाश पर्वत पर अपने चार अघातिया कर्म नष्ट करके मोक्ष प्राप्त किया। बद्रीनाथ में स्थापित भगवान आदिनाथ के चरण अत्यन्त प्राचीन हैं। भारत की सीमा का अंतिम गांव 'माना' 3 कि.मी. की दूरी पर है। कैलाश पर्वत इससे आगे है। निर्वाण भूमि के प्रतीक स्वरुप इस तीर्थ पर चरण स्थापित किये गये हैं। पहाड़ पर एक जिनमंदिर है।

बद्रीनाथ तीर्थ उत्तराचंल राज्य के चमोली जिले के ग्राम बद्रीनाथ में है। यहाँ से हरिद्वार रेल्वे स्टेशन 320 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर मंदिर और धर्मशाला अक्षय तृतीया से शरद पूर्णिमा तक खुली रहती है। शेष समय यहाँ भारी बर्फ गिरने के कारण क्षेत्र का मार्ग और धर्मशाला बंद रहती है। भोजनालय में भोजन की सुविधा पूर्व सूचना देने पर उपलब्ध हो जाती है।

क्षेत्र का फोन नम्बर – 01381–222334

महावीर के सच्चे भक्त कौन हैं ?

1. जो प्रतिदिन जिनेन्द्र देव के दर्शन करते हैं.....
2. जो पानी छानकर पीते हैं......
3. जो रात्रि भोजन नहीं करते ......
4. जो आलू - प्याज, गाजर-मूली आदि जमीकंद नहीं खाते....
5. जो गाली आदि नहीं देते और मीठे और सत्य वचन बोलते हैं...
6. जो चमड़े की वस्तुयें नहीं पहनते....
7. जो जिनवाणी से प्रेम करते हैं और जिनवाणी पढ़ते हैं...
8. जो दान देते हैं....
9. जो दिगम्बर गुरुओं की सेवा करते हैं...
10. जो जैन धर्म की प्रभावना करना चाहते हैं और उसके लिये प्रयास भी करते हैं..
11. जो असहाय साधर्मियों के प्रति सहयोग की भावना रखते हैं और यथा संभव सहयोग करते हैं।

अब आप स्वयं सोचिये कि आप भगवान के सच्चे भक्त हैं या नहीं।

– परी संजय जैन, जबलपुर

महावीर की अहिंसक क्रांति का प्रभाव

भगवान महावीर के आचरण और ज्ञान से न केवल जैन साधर्मी बल्कि अन्य धर्म को मानने वाले बहुत प्रभावित थे। आइये कुछ बातें जानें

1. यूनान में पाइथागोरस संप्रदाय प्रचलित है। इसके संस्थापक संत पाइथागोरस भगवान महावीर के काल में भारत आये थे। ये भगवान महावीर के सिद्धांतों से बहुत प्रभावित थे। पाइथागोरस संप्रदाय की मुख्य बातों में एक यह है कि मनुष्य जब स्व को पहचान लेता है तो देवत्व प्राप्त कर लेता है। यह सिद्धांत ग्रीस के डलफा नगर के अपोलो मंदिर के द्वार पर उत्कीर्ण है। इस संप्रदाय में मांसाहार और द्विदल का सेवन मना है। इसके साधु मौन व्रत पालकर तप करते हैं।
2. इसी तरह यूनानी विद्वान पैरहो भगवान महावीर के समय में भारत आया और भगवान महावीर के उपदेशों से प्रभावित होकर अपने सिद्धांतों में स्याद्वाद का अनुकरण किया था।
3. भगवान महावीर के कुछ समय बाद चीन के प्रसिद्ध संत लोओत्जे और फूत्जे कुंग भी भगवान महावीर की वाणी से प्रभावित हुये। इनके सिद्धांतों में भगवान महावीर के उपदेशों की झलक मिलती है। चीनी तुर्किस्तान के गुहा के मंदिरों में जैन धर्म सम्बन्धी चित्र उपलब्ध हैं।
4. मौर्य वंश के सम्राट अशोक के पौत्र ने जैन साधुओं को जैन धर्म के प्रचार के लिये अफगानिस्तान, अरब और ईरान भेजा था।
5. ईसाई धर्म के संस्थापक ईसा मसीह ने जैन धर्म के सिद्धांतों से प्रभावित थे। ऐसा माना जाता है कि ईसा मसीह ने जैन तीर्थ पालीताना जाकर 40 दिन के जैन विधि के अनुसार उपवास किये और जैन धर्म की शिक्षा प्राप्त की। बाद में उनके अनुयायियों ने पालीताना के आधार पर दक्षिण में पैलेस्टाइन नाम का नगर बसाया था।

शाकाहारी है या मांसाहारी ?

स्वयं निर्णय करें।

शाकाहारी की पहचान :-

1. पानी जीभ निकालकर नहीं पीते, बल्कि मुंह को पानी में डुबोकर होंठों की सहायता से पीते हैं।
2. दांत तथा नाखून सपाट होते हैं।
3. पाचन कार्य मुंह से प्रारंभ होता है।
4. पेट की आंत लम्बी होती हैं।
5. एक समय में एक अथवा दो बच्चे पैदा होते हैं।
6. बच्चे पैदा होते समय आंख खोले रखते हैं।
7. अधिक दूरी का देखने में असमर्थ होते हैं। रात्रि में अधिक नहीं दिखाई देता और सूंघने की शक्ति अधिक तीव्र नहीं होती है।
8. हड्डियाँ मजबूत होती हैं। घाव जल्दी ठीक हो जाते हैं।
9. जबड़ा भोजन को चबाने के लिये ऊपर नीचे, दायें-बायें चारों ओर घूम सकता है।
10. स्वभाव और चेहरे की बनावट से शान्त प्रकृति के होते हैं।
11. अधिकांश लम्बी आयु के होते हैं।
12. शरीर से पसीना निकलता है।
13. शाकाहार से मन प्रसन्न रहता है, व्यवहार में शालीनता होती है।

मांसाहारी की पहचान :-

1. पानी जीभ की सहायता से चाट–चाटकर पीते हैं।
2. दांत तथा नाखून नुकीले होते हैं, जिससे शिकार पकड़ने में आसानी होती है।

3. पाचन कार्य अमाशय से प्रारंभ होता है।
4. पेट की आंत छोटी होती हैं, जिससे मांस उनमें शीघ्र पच जाये और सड़ने के पहले बाहर निकल सके।

5. एक समय में एक से अधिक बच्चे पैदा होते हैं।
6. बच्चे पैदा होते समय आंख बंद रखते हैं।
7. आंखें अधिक दूरी का देखने में समर्थ होती हैं। रात्रि में अधिक दिखाई देता है और सूंघने की शक्ति अधिक तीव्र होती है जिससे शिकार पकड़ने में आसानी होती है।
8. हड्डियाँ मजबूत नहीं होती हैं। घाव जल्दी ठीक नहीं होते हैं।
9. जबड़ा मांस को चबाने के लिये ऊपर – नीचे ही चलता है।
10. स्वभाव और चेहरे की बनावट से हिंसक प्रकृति के होते हैं।
11. प्रायः अल्पायु के होते हैं।
12. इनके शरीर से पसीना नहीं निकलता। पसीना जीभ और पैरों की गद्दियों से आता है।
13. मांसाहार से विचारों में उग्रपना रहता है, हिंसक प्रवृति अधिक तीव्र होती है।

अब आप स्वयं निर्णय करें कि शाकाहारी कौन और माँसाहारी कौन ?

सच्चा पारखी

गुजरात के प्रसिद्ध संत श्रीमद् राजचन्दजी को महात्मा गांधी अपना गुरु मानते थे। श्रीमद्जी अनेक धर्मों के जानकार और विशेष बुद्धि के धनी थे। इनकी हीरे जवाहरात की दुकान थी। एक दिन वे अपनी दुकान में बैठे थे तभी एक सज्जन आये और उन्होंने एक ग्रन्थ श्रीमद्जी को दिया। राजचंदजी उसे खोलकर पढ़ने लगे। आधा घंटे बाद खुशी से उछलते हुये बोले – धन्य है यह महाग्रंथ। इसमें तो धर्म के प्राण, आत्मा की सच्ची सुख शांति और आत्मा की स्वाधीनता की बात लिखी है। अहो! यह ग्रंथ तो अमृत का सागर, रत्नों का खजाना, कामधेनु गाय है और आत्मा कल्पवृक्ष है। आज तो तुमने मुझे अमूल्य रत्न दे दिया। वह ग्रंथ समयसार था। इतना कहकर राजचंद जी ने पेटी में से मुट्ठी भरकर रत्न उस ग्रंथ लाने वाले को दिये। समयसार लाने वाला भाई और आसपास के सभी व्यक्ति आश्चर्य से राजचंदजी को देख रहे थे।

यह है सत्य तत्व और उसके बताने वाले की महिमा।

– स्वस्ति जैन, देवलाली

निर्णय

तीर्थंकर नेमीनाथ की दिव्य ध्वनि मेंआया कि आज से 12 वर्ष बाद द्वारका नगरी जलकर भस्म हो जायेगी। यह बात श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न कुमार को मालूम हुई। वह सोचने लगा कि इस प्रकार से मरने से अच्छा जिनदीक्षा आत्मकल्याण करना चाहिये। वह दौड़ा-दौड़ा अपने ताऊबलराम के पास गया और उनसे दीक्षा लेने का विचार बताया। प्रद्युम्न की मुनि दीक्षा की भावना सुनकर वे सोचने लगे कि हम बड़े और वृद्ध बैठे हैं और यह युवक जवानी में दीक्षा की बात करता है। उन्होंने प्रद्युम्न से कहा कि अभी दीक्षा का समय नहीं है।

इसके बाद वह अपनी पत्नी के पास पहुँचा और कहने लगा कि मैं दीक्षा लेना चाहता हूँ। यह सुनकर पत्नी ने पूछा कि आपको वैराग्य कहाँ से हो गया? यदि आपको सच्चा वैराग्य हुआ होता तो मेरे पास आकर पूछने की आवश्यकता ही नहीं थीं। आपको वैराग्य नहीं द्वारका के जलने का डर है।

इतना कहकर पत्नी ने तुरंत राजशाही वस्त्रों का त्यागकर सफेद वस्त्र पहन लिये और वन में जाकर आर्यिका दीक्षा ले ली।

– अभिजीत शास्त्री, जयपुर

समाचार

धार्मिक बाल गीत अब इंटरनेट पर

ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन खनियांधाना और श्री विराग शास्त्री, देवलाली के द्वारा अनेक लोकप्रिय बालगीतों की रचना की गई है। जिनमें से अनेक गीतों की छह वीडियो सी.डी. का निर्माण आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन जबलपुर ने किया है। इन समस्त वीडियो सी.डी. का निर्माण श्री विराग शास्त्री के निर्देशन में हुआ है। अब आप इन बाल गीतों को इंटरनेट पर सुन सकते हैं। इसका प्रसारण समय प्रातः 5.30 और प्रातः 9.30 बजे का है। अमेरिका निवासी श्री राजेश भाई शाह के अथक प्रयासों से इंटरनेट पर 24 घंटे चलने वाला रेडियो चैनल प्रारंभ किया है। इसके लिये आप WWW.JAINREDIOLIVE.COM को लॉग इन कर आप इसका लाभ ले सकते हैं। इसके साथ ही समयानुसार पूजन, भक्ति, प्रवचन, भक्तामर, स्तुति आदि भी सुनने का लाभ मिलेगा। इसी बेबसाइट पर प्रसारण का पूरा कार्यक्रम भी देखा जा सकता है।

बाल गीत वीडियो तोता तू क्यों का रोता का विमोचन

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन (रजि.) जबलपुर द्वारा बाल एवं युवा वर्ग में धार्मिक संस्कारों के लिये किये जा रहे के प्रयासों के अंतर्गत अब तक पाँच वीडियो सी.डी. का निर्माण किया गया है। इसके अगले पुष्प के रूप में संस्था ने अब ''तोता तू क्यों रोता'' का निर्माण किया है। इसका विमोचन चैतन्यधाम (अहमदाबाद) के पंचकल्याणक के अवसर पर संस्था के परम संरक्षक माननीय श्री अनंतराय ए. सेठ मुम्बई के द्वारा किया गया। महोत्सव में आये हुये साधर्मियों ने इसे देखकर इसके लिये संस्था को धन्यवाद दिया और आगे भी इसी प्रकार के कार्यों के लिये शुभकामनायें दीं। सी. डी. प्राप्त करने के इच्छुक संस्था के पते पर संपर्क कर सकते हैं।

विशेष सूचना

संस्था के सचिव और पत्रिका के संपादक श्री विराग शास्त्री अब स्थायी रूप से देवलाली नासिक महा. में निवास करने लगे हैं। पत्रिका के प्रारंभ से ही श्री विराग शास्त्री ''चहकती चेतना'' का संपूर्ण दायित्व संभाल रहे हैं। सदस्यों की संपूर्ण जानकारी मुख्य रूप से उन्हीं को है। पत्रिका का प्रकाशन और पोस्टिंग का कार्य जबलपुर से ही संपन्न हो रहा है। अतः किसी भी प्रकार की जानकारी के लिये आप श्री विराग शास्त्री से 09373294684 पर संपर्क करें अथवा CHEKTICHETNA@YAHOO.COM पर ई-मेल करें।

कविता

हमको शिविर में जाना है
मम्मी ने बतलाया है
तुमको शिविर में जाना है
मैंने पूछा - कैसा शिविर ?
क्या करेगा ये शिविर ?
मम्मी बोली - शि से शिक्षा
वि से विशेष रहेगी जहाँ
ऐसी अच्छी बातें रहेंगी वहाँ
वो ही है हमारा शिविर
जहाँ मिटेगा अज्ञान तिमिर
मैंने सोचा - जाकर देखूँ
ऐसा क्या है ? सुनकर जानूँ
पंडितजी ने जो सिखलाया
जैन धर्म मुझे समझ में आया
स्व और पर का भेद बताया
मुझको सोते से जगाया
अच्छी-अच्छी बातें बताई
हमको सच्ची राह दिखाई
ऐसा सुन्दर शिविर का काल
हमको आना यहाँ हर साल ॥

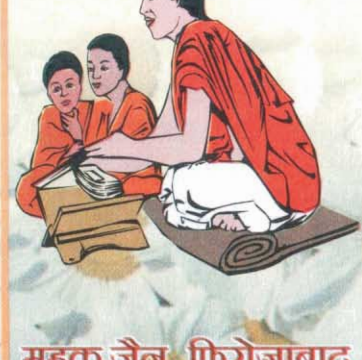

महक जैन, फिरोजाबाद

चहकती चेतना के पाठक ध्यान दें।

सदस्यता भी और उपहार भी (योजना सीमित समय के लिये)

जिन सदस्यों की सदस्यता अवधि पूर्ण हो गई है अथवा पूर्ण होने वाली है, वे अपनी सदस्यता राशि 300/– रु. तीन वर्ष हेतु जमा करा देवें और जो वर्तमान अथवा नये सदस्य आजीवन सदस्यता (12 वर्ष हेतु) प्राप्त करना चाहते हैं वे 1500/– रु. प्रेषित करें। सदस्यता राशि जमा करने हेतु आप ''चहकती चेतना, जबलपुर'' के नाम से ड्राफ्ट अथवा चैक के बनाकर संस्था के पते ''चहकती चेतना, सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर 482002 म.प्र.'' पर प्रेषित करें। कोर बैंकिंग वाले चैक ही स्वाकार्य होंगे।

आप सदस्यता राशि चहकती चेतना के पंजाब नेशनल बैंक जबलपुर के बचत खाता क्रमांक 1937000101030106 में जमा करके हमें पत्र अथवा फोन द्वारा सूचित कर सकते हैं। आजीवन सदस्यता लेने वाले सदस्यों को आगामी निर्मित होने वाली दो बाल वीडियो सी.डी. और शीघ्र प्रकाशित होने वाली धार्मिक कविताओं की रंगीन पुस्तक उपहार में दी जायेगी और उनके नाम पत्रिका में प्रकाशित किये जायेंगे।

नाम ------------------- पिता का नाम ------------------

पता --

-------------------------- पिन कोड --------------

फोन नम्बर --------------- मोबाइल नंबर ---------------

चैक/ ड्राफ्ट नम्बर --------------- बैंक का नाम --------------

सीधे बैंक में जमा करने पर :

जमा करने की तिथि ------------------ राशि --------------

राशि प्राप्त होने पर आपको रसीद भेजी जायेगी।

जानिये कर्मों के बारे में

जो आत्मा को पराधीन करता है, दु:ख देता है, संसार में परिभ्रमण कराता है, उसे कर्म कहते हैं। ये कर्म मुख्य रूप से आठ प्रकार के हैं।

1. ज्ञानावरण	2. दर्शनावरण	3. वेदनीय
4. मोहनीय	5. आयु	6. नाम
7. गोत्र	8. अंतराय	

इनमें से जानिये चार घातिया कर्म के बारे में –

1. ज्ञानावरण कर्म – जो कर्म ज्ञान न होने में निमित्त हो अथवा ज्ञान का अधिक या कम होने में कारण बनता है, उसे ज्ञानावरण कर्म कहते हैं। जैसे एक व्यक्ति विद्वान, कोई मूर्ख होता है, किसी को बार–बार पढ़ने पर याद होता है, किसी को एक बाद पढ़ने पर याद होता है। यह सब ज्ञानावरण कर्म का कार्य है।

दूसरों के गुणों को देखकर ईर्ष्या करना, अपने गुरु का नाम छिपाना, गुणवानों का आदर न करना, पढ़ने वालों को परेशान करना आदि कारणों से ज्ञानावरण कर्म का बंधन होता है।

2. दर्शनावरण कर्म – जो कर्म ज्ञान के पूर्व होने वाले दर्शन को न होने दे उसे दर्शनावरण कर्म कहते हैं। इस कर्म के उदय में बहुत निद्रा का आना, कम निद्रा आना, लार बहना आदि कार्य होते हैं। जैसे द्वारपाल महल में प्रवेश नहीं करने देता वैसे ही दर्शनावरण कर्म सामान्य प्रतिभास नहीं होने में निमित्त बनता हैं।

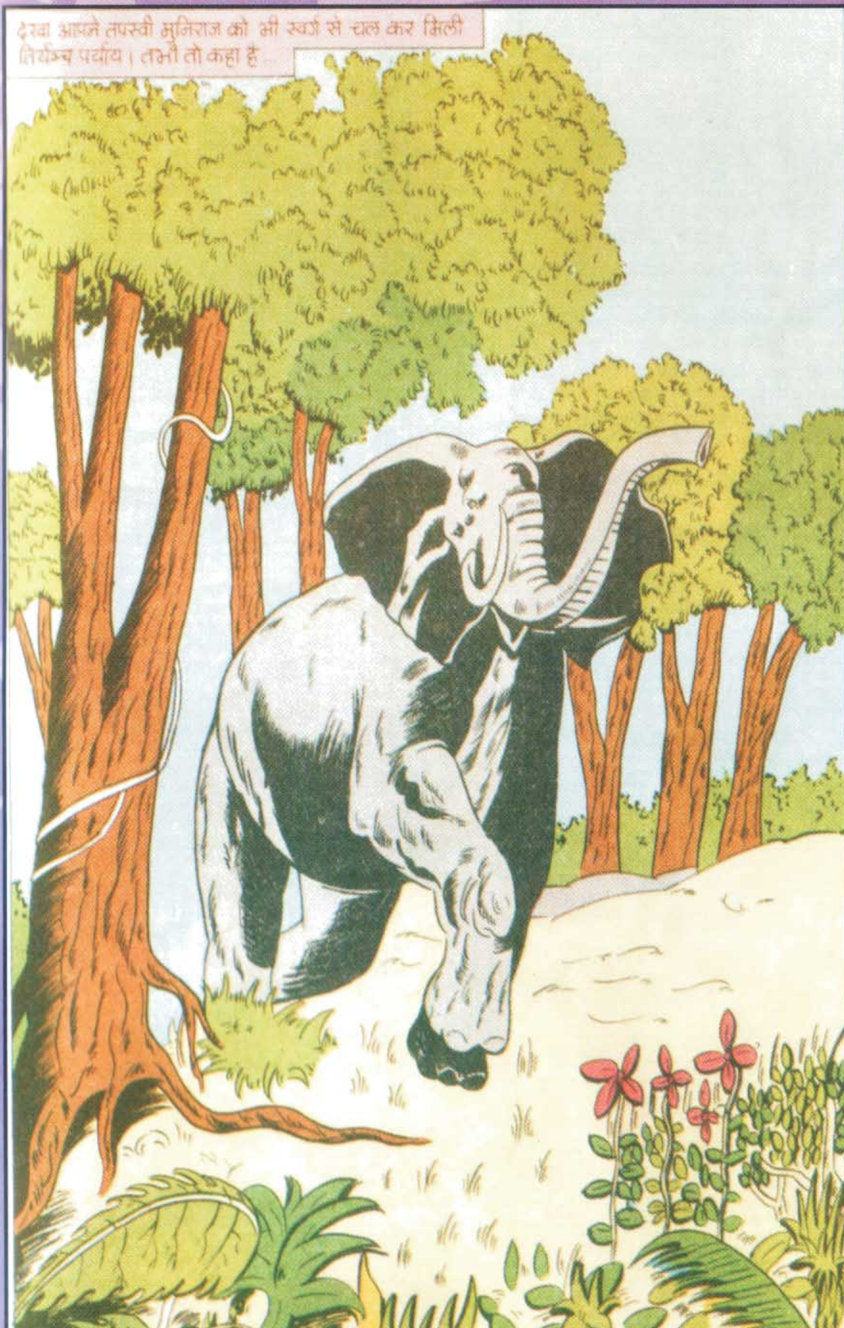
देखा आपने तपस्वी मुनिराज को भी स्वर्ग से चल कर मिली तिर्यञ्च पर्याय। तभी तो कहा है...
"मन में हो सो वचन उचरिये।
वचन होय सो तन सो करिये।"

सही जोड़ी बनाइये

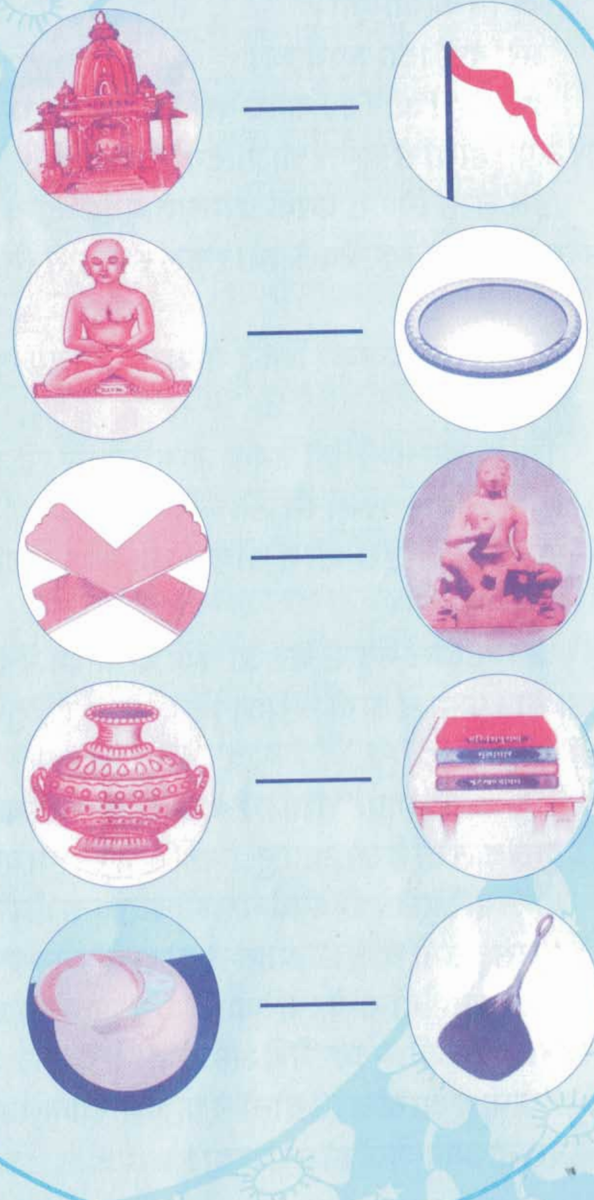

मम्मी को उपहार

2 दिन बाद ही स्वयंऔर सिद्धि की मम्मी का जन्मदिन था। दोनों बच्चे अपनी माँ को एक बढिया सा उपहार देना चाहते थे। इसके लिये दोनों ने अपने पिग्गी बैंक तोड़ दिये।

''मेरे पिग्गी बैंक से 92 रुपये निकले हैं'' स्वयं ने बताया।

'और मेरे पास कुल 88 रुपये हैं यानि कुल मिलाकर 180 रुपये।''

हाँ, हम दोनों मिलकर मम्मी को एक बढ़िया सा उपहार लाकर देंगे।

परन्तु क्या ? सिद्धि ने पूछा।

क्यों न हम मम्मी का एक सुन्दर सी साड़ी लाकर दें

अरे बुद्धु! 180 रुपये में अच्छी साड़ी कैसे आयेगी और मम्मी के पास पहले से ढ़ेर सारी साड़ियाँ हैं।

''तो अच्छा सा पर्स लाकर देते हैं'' स्वयं ने फिर सलाह दी।

पर्स नहीं। मम्मी अभी कुछ दिन पहले ही नया पर्स लेकर आईं हैं।

दोनों बच्चे बहुत देर तक सोचते रहे तभी सिद्धि बोली ''क्यों न हम मम्मी को मेकअप किट लाकर दें।''

'' पागल कहीं की ! पाठशाला में पढ़ती हो कि शरीर के श्रृंगार से पाप लगता है और मम्मी को मेकअप किट। वैसे भी मम्मी को मेकअप बहुत कम करती हैं। ना बाबा ना। हमें तो ऐसा गिफ्ट देना चाहिये जो उनके पास ना हो और उनके काम का भी।'' स्वयं

ने सोचते हुये कहा।

तो एक काम करें। हम मम्मी को प्रवचन और भक्ति की सी.डी. का सैट देंगे।

कितने का आयेगा ?

अरे! बस 150 रुपये का।

अरे वाह ! और 30 रुपये बचेंगे उससे हम बाजार से सामान लाकर अपने हाथों से सुन्दर सा ग्रीटिंग बनाकर देंगे।

इस तरह निर्णय करके प्रसन्नतापूर्वक दोनों बच्चे सो गये। सुबह उठकर दोनों स्कूल चले गये। स्कूल से लौटते समय स्वयं उदास था।

उसे उदास देखकर सिद्धि ने पूछा - स्वयं तुम उदास क्यों हो ?

सिद्धि, हम मम्मी को उनके जन्मदिन पर सी.डी. का सेट तो दे देंगे। लेकिन हमारे घर तो सी.डी. प्लेयर ही नहीं है।

अरे हमने तो इस बारे में सोचा ही नहीं था। काश ! हमारे पास बहुत सारे रुपये होते।

दोनों उदास मन से घर आ गये। दोनों का मन बिल्कुल नहीं लग रहा था। पापा ने दोनों से पूछा कि क्या बात है तुम दोनों उदास लग रहे हो।

''कुछ नहीं पापा'' सिद्धि ने बनावटी हंसकर कहा।

कुछ बात तो है जो आप मुझे नहीं बता रहे हो। पापा ने कहा।

बार-बार पूछने पर स्वयं ने सारी बात बता दी।

''बस इतनी बात।'' पापा ने दोनों के सिर पर हाथ फेरकर कहा। ''जब आप दोनों के परिणाम इतने अच्छे हैं तो मेरी उसमें अनुमोदना है। सी.डी. प्लेयर मेरी ओर से।''

''पापा यू आर ग्रेट।'' दोनों ने चहककर कहा।

ग्रेट तो आप दोनों हो मेरे बच्चो।

– विरोग शास्त्री

मैं भी चलूँगा

– गगन ! तुम कल सुबह जल्दी आ जाना।

– क्यों? कल कोई खास बात है?

– हाँ ! अपने अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर की जन्म जंयती का दिन है। कल मंदिर में पूजन है और पूजन के बाद विशाल शोभायात्रा निकलेगी।

– अरे निशंक भाई! तो इसमें मेरा क्या काम है?

– गगन ! इसमें काम की क्या बात है? ये तो हमारा कर्तव्य है। हमारे भगवान महावीर का जन्मजयंती महोत्सव है और इसमें हमें उत्साह से भाग लेना चाहिये।

– लेकिन निशंक भाई! कल मुझे बहुत सारे काम हैंऔर पूजन में मुझे बहुत बोर लगता है और शोभायात्रा में जाने से क्या फायदा ? कितनी भीड़ होती है और सारे कपड़े गंदे हो जाते हैं। बस चलते रहो, चलते रहो बहुत थकान हो जाती है।

– अरे गगन ! तुम कैसी बातें कर रहे हो? ये तो हमारा सौभाग्य है कि हमें इस जन्म जयंती के कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर प्राप्त हो रहा है।

– छोड़ो ये सब बेकार की बातें------।

– अच्छा ! तुम ये बताओ कि तुम पढ़ाई करके क्या करना चाहते हो ?

– मैं डॉक्टर बनकर बहुत सारे रुपये कमाना चाहता हूँ और अपने पिता का नाम रोशन करना चाहता हूँ।

– क्यों ?

– अरे मेरे पिताजी ने मुझे जन्म दिया और मेरा बहुत ध्यान रखते हैं। मेरी पढ़ाई के लिये बहुत रुपया खर्च करते हैं।

– तुम्हें अपने पिताजी की बहुत महिमा आ रही है ना। ऐसे ही भगवान महावीर हमारे धर्म पिता हैं। उन्होंने हमें सच्चे धर्म की शिक्षा दी। तुम डाक्टर बन जाओगे तो इस जन्म में सुख–सुविधायें भोग पाओगे। लेकिन भगवान महावीर ने हमें अनंत जन्मों तक सुखी होने का मार्ग बताया है। जन्म–मरण का अंत करने का मार्ग बताया है। हम पर उनका अनंत उपकार है। कुछ समझ में आया।

– हाँ! कुछ–कुछ आ रहा है।

– तुम डॉक्टर बनने के लिये और पापा का नाम रोशन करने के लिये हर संघर्ष करने के लिये तैयार हो परंतु जिनधर्म की प्रभावना के लिये जन्म जयंती की शोभायात्रा में जाने के लिये तुम मना कर रहे हो।

– शोभायात्रा में इतना खर्च होता है यह सब ठीक है क्या?

– हम अपने परिवार में होने वाले विवाह, जन्मदिन आदि में खर्च करते समय कुछ सोचते हैं क्या? पार्टी, पिकनिक में कितना रुपया खर्च करते हैं तब हम खर्च का विचार नहीं करते तो जिनधर्म की प्रभावना में तो खर्च की बात ही नहीं करना चाहिये। जिस जन्म कल्याणक को मनाने के लिये स्वयं सौधर्म इन्द्र आते हैं, कुबेर रत्नों की वर्षा करता है और तुम खर्च की बात कर रहे हो!

– पर निशंक भाई!

– पर क्या गगन ?अरे जिस धर्म के प्रचार के लिये निकलंक ने अपने प्राण गंवा दिये, पण्डित टोडरमलजी ने हाथी के पैर के नीचे अपने जान गंवा दी और हमने इस धर्म के लिये क्या किया?

– सॉरी निशंक भाई! मैं अज्ञानता में ऐसी बात कर रहा था और मैं इसके लिये बहुत शर्मिंदा हूँ। अब आगे से ऐसी गल्ती नहीं करूँगा और मेरे जीवन में जितना हो सकेगा स्वयं जैन धर्म का पालन का करूँगा और प्रचार भी करूँगा।

– वाह गगन! ये हुई ना बात। तो फिर कल सुबह ----------

– जल्दी मंदिर पहुँच जाऊँगा।

– विराग शास्त्री

लघु कहानी

मोह का फल

एक गरीब आदमी खेती करके अपना पेट भरता था। भाग्य से कुछ दिनों में धनवान बन गया। परिवार भी बहुत बड़ा हो गया। सारे पुत्र युवा होकर अपनी -अपनी दुकानों पर और खेती पर काम करने लग गये थे। किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं था।

एक दिन उस वृद्ध किसान से मुनिराज ने कहा – भाई! घर में सब प्रकार की अनुकूलता है अब तो तुम्हें सब त्यागकर आत्कल्याण करना चाहिये।

वृद्ध किसान बोला – मुनिवर! घर की देखभाल करने वाला कोई नहीं है, यदि घर छोड़ दूँगा तो सब लुट जायेगा। अभी तो बच्चों की शादी करना है। मुनिराज यह सुनकर चले गये।

कुछ दिन बाद वह वृद्ध मरकर कुत्ता हो गया और अपने घर के दरवाजे पर बैठकर पहरा देता रहता। कोई अनजान आदमी आता तो भौंककर उसको दूर भगा देता। एक दिन वही मुनिराज आये और कहने लगे – भाई ! इस दशा में आकर अब तो विचार कर लो और आत्मकल्याण कर लो। कुत्ते ने अपनी वाणी में कहा – मैं घर छोड़ दूंगा तो मेरे घर की रखवाली कौन करेगा ? आपके साथ बाद में चलूँगा।

कुछ समय बाद वह कुत्ता मरकर बैल हो गया। उसका मालिक अनाज ढोता था। बैलगाड़ी में उस पर बहुत ज्यादा बोझ लादा जाता था। वह बहुत ज्यादा मेहनत करता था। वह बैल मार खाकर भी काम करता रहता था। एक दिन वही मुनिराज आये और बैल से बोले – भाई! अब तो मेरी बात मान लो। चलो ! आत्मकल्याण कर लो। बैल अपनी भाषा में कहने लगा कि अभी खेतों में अनाज पड़ा है। उसे गोदाम तक कौन पहुँचायेगा ? मुनिराज यह सुनकर चले गये। वह बैल बूढ़ा होकर मर गया और मरकर अपने उसी घर में सांप हो गया। वह सांप अपनी तिजोरी पर बैठा रहता। घर के लोग देखकर डरते रहते। एक दिन वह अपने पूर्व पुत्र के पैर में लिपट गया। यह देखकर दूसरे पुत्रों ने उसे डण्डे से बहुत मारा। उसकी सांस चल रही थी। तब वही मुनिराज आये और बोले भाई! अब तो संभल जा। जिन पुत्रों के मोह में तुमने इतने दुःख भोगे उन्हीं पुत्रों ने तुम्हारी हत्या करने का प्रयास किया। इतना सुनकर सांप मर गया और बुरे परिणामों से मरकर नरक चला गया। देखा आपने ! मोह का फल।

संकलित – जैन धर्म की कहानियाँ
भाग 15

भूल सुधार

पिछले अंक में प्रकाशित आपके प्रश्न हमारे उत्तर स्तंभ में दही भक्ष्य है कि अभक्ष्य के उत्तर में हमने दूध को उबालकर जमाये गये दही को मर्यादापूर्वक भक्ष्य बताया था। यह मर्यादा गाय अथवा भैंस से दूध निकालने के बाद 48 मिनिट के पहले उबाल लेना चाहिये। उसी दूध का जमाया हुआ दही आगम की मर्यादा अनुसार भक्ष्य है।

यदि आप भी अपने जन्मदिन पर
शुभकामना प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो
300/- (1 वर्ष के लिये) अथवा
1000/- (पाँच वर्ष के लिये) का ड्राफ्ट
चहकती चेतना के नाम से बनाकर अथवा
चहकती चेतना के 'पंजाब नेशनल बैंक, जबलपुर' के
खाता क्रमांक 1937000101030106 में
जमा कराकर हमें सूचित करें तथा
हमें फोटो और जन्मदिवस की तारीख भेजें।

हास्य प्रसंग

एक पिताजी अपने चार साल के बेटे को मंदिर ले गये। वहाँ पर दर्शन करके ध्यान मुद्रा आंखें बंद करके बैठ गये। बेटा भी उनको देखकर वैसे ही बैठ गया। बाद में घर लौटते समय पिताजी ने बेटे से कहा कि जब मैं ध्यान कर रहा था तो तुम बार-बार आंख खोलकर मुझे क्यों देख रहे थे? बेटे ने कहा - मैं तो आपको देख रहा था लेकिन आपको कैसे मालूम हुआ कि मैं आपको देख रहा था।

आगामी बाल शिविर

28 अप्रेल से 4 मई तक - देवलाली नासिक
14 मई से 28 मई तक - प्रशिक्षण शिविर कोलारस शिवपुरी
17 मई से 24 मई तक - चैतन्य धाम गांधीनगर
28 मई से 4 जून तक - सिद्धायतन द्रोणगिरि म.प्र.
29 मई से 8 जून तक - भिण्ड (म.प्र.)

सूचना

पोन्नूर जाने वाले साधर्मी ध्यान देवें - जो साधर्मी बन्धु आचार्य कुन्दकुन्द की साधना और तप स्थली पोन्नूर तीर्थ वन्दना हेतु जाना चाहते हैं, वे जाने के पूर्व किसी भी प्रकार की जानकारी के लिये पोन्नूर के प्रबंधक श्री राजीव जैन से 04183-291136, 321520 पर अथवा श्री विराग शास्त्री से 09373294684 पर संपर्क कर सकते हैं।

आपके प्रश्न हमारे उत्तर

प्रश्न-1. अस्वस्थ होने पर मंदिर जाना अंसभव हो तो क्या घर पर पूजन कर सकते हैं?

उत्तर- अस्वस्थता होने पर घर पर ही शास्त्र के सामने अरहंत, सिद्ध के स्मरण करके भावपूजा कर सकते हैं।

प्रश्न-2. मुनिराज को जय जिनेन्द्र क्यों नहीं करते?

उत्तर - जयजिनेन्द्र अपने बराबर के आयु वालों को बोला जाता है, मुनिराज पूज्य हैं इसलिये उन्हें नमोस्तु कहा जाता है।

प्रश्न-3. समवशरण में अरहंत भगवान क्या आसन या करवट बदलते हैं? भगवान का विहार होने पर सब लोग समवशरण के साथ कैसे चलते होंगे?

उत्तर- अरहंत भगवान समवशरण में करवट नहीं बदलते हैं क्योंकि उनको थकावट नहीं होती है। विहार के समय सभी श्रोता साथ नहीं चलते, केवल ऋद्धिधारी मुनि साथ में चलते हैं।

प्रश्न -4. जो लोग स्तुति या पूजा का अर्थ नहीं जानते उन्हें पुण्य बंध होता है या नहीं ?

उत्तर - उन्हें मंद कषाय का पुण्य बंध तो होता है। यदि वे लौकिक कामना से स्तुति या पूजा करते है तो पाप ही बंधता है।

प्रश्न -5. जीव दु:खी क्यों होता है?

उत्तर - मात्र अपने अज्ञान के कारण ।

यदि आपके मन में किसी भी प्रकार का कोई प्रश्न हो तो आप हमें लिख भेजें हम उसका उत्तर प्रकाशित करेंगे ।

PENTING

आपके ब्रश से

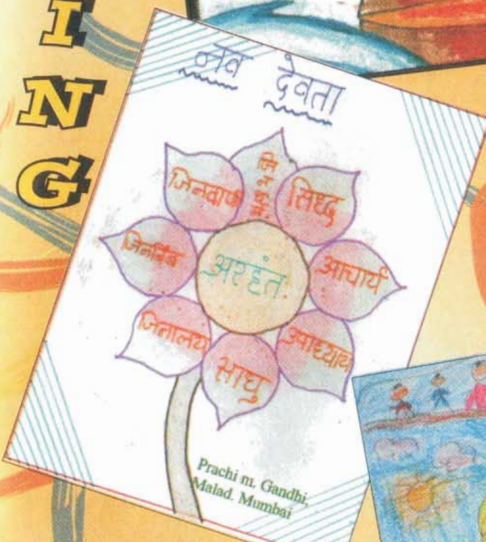

ईशान धवल शहा
खांदा कॉलोनी, न्यू पनवेल

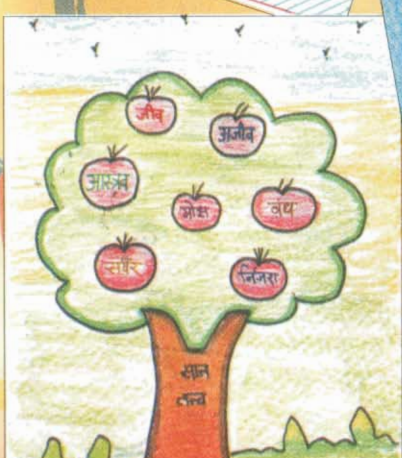

उत्तम आर्जव

इसके पूर्व आपने पढ़ा कि मृदुमति चोर अपने साथियों केसाथ राजमहल में चोरी करने गया। वहां राजा की वैराग्यपूर्ण चर्चा सुनकर वैराग्य हो गया और मुनि दीक्षा ले ली।

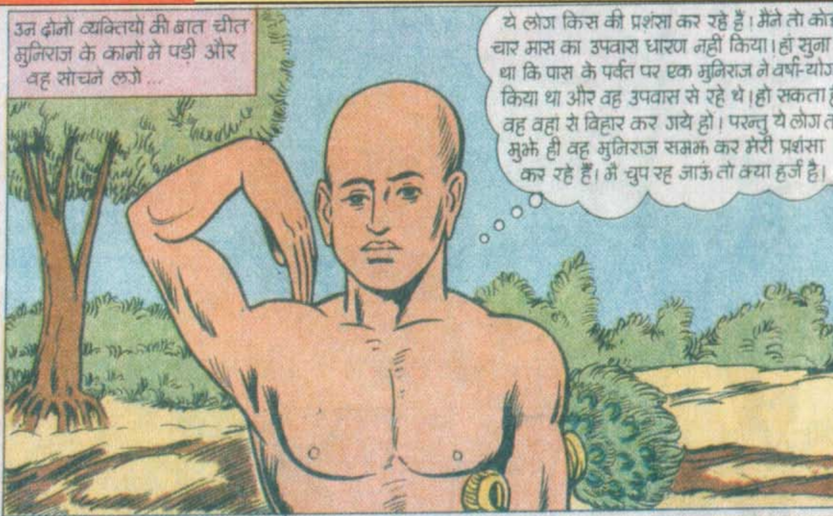

ऐसी मायाचारी के परिणाम आये उन के मन में और चुप रह गये। गुरू जी से भी प्रायश्चित नहीं लिया। मायाचारी के परिणाम रंग दिखाये बिना न रहे। तपस्या बहुत की थी इसलिये मरण कर के पहुंचे छठे स्वर्ग में...